अध्याय षष्ठ

उपसंहार

उपसंहार

स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में परिचित नेपाल देश संघीय गणतांत्रिक मुल्क जिसको बहुजातीय, बहुभाषीय और बहुसंस्कृति के बाग के रूप में जाना जाता है। यह प्राकृतिक सौन्दर्य से सुसज्जित एवं विभिन्न भौगोलिक विविधता से भरपूर एक सुन्दर राष्ट्र है जहां हिमाल, पहाड़ तथा तराई क्षेत्र है। इन अलग अलग स्थानों में विभिन्न जाति तथा जनजातियों का निवास है। शोधार्थिनी संगीत कला के गायन क्षेत्र में कार्यरत होने के कारण इन्हीं जनजातियों में से नेवार जाति में उपलब्ध विभिन्न संगीत प्रकार, वाद्य, नृत्य, नाटक आदि कलाओं का अध्ययन कर; नेवारी लोक संगीत के विषय में शोधकार्य किया है। शोधार्थिनी ने नेपाल में प्रचलित विभिन्न लोक संगीत में से नेवारी लोक संगीत विषय में कार्य प्रस्तुत किया है। नेवारी संगीत नेवारी जाति द्वारा गाया/बजाया जाने वाला संगीत है जो प्राचीन काल से चले आ रहे संगीत की प्राचीन परंपरा के रूप में माना गया है। नेवारी जाति का मुख्य निवास स्थान नेपाल की राजधानी शहर काठमांडू तथा आसपास के जिलें जैसे भक्तपुर, ललितपुर इत्यादि है। नेवारी जाति को आदिवासी जाति कहते है जो प्राचीन समय से काठमांडू उपत्यका में निवास करते आए हैं। इस जाति की पूरे नेपाल में अपनी अलग पहचान, बोली-भाषा, संगीत, कला-संस्कृति, तौर-तरीके, रहन-सहन इत्यादि है। मुख्य स्थान में रहवास होने से ज्यादा ध्यानाकर्षण तथा चर्चा में आने वाली नेवारी जाति के संगीत केवल अपने जाति में ही सीमित नहीं है। अपने देश की कला एवं संगीत को बढ़ावा देने में इनका मुख्य हाथ मान सकते है। इस तरह मुख्य भूमिका निभाने वाले नेवारी संगीत की प्रयोगात्मक शैली परंपरागत रूप में मौखिक पद्धति होने के कारण लिखित एवं शास्त्रोक्त सामग्री की कमी महसुस होती है। इस लोक संगीत के भविष्य को निरंतरता देने के लिए जितना हो सके उतना दोनों पक्ष को संशोधनात्मक अध्ययन की आवश्यकता है। मौलिक संस्कृति, लोक परंपरा, जात्रा-पर्व, संगीत तथा वाद्यवादन में सम्पन्न नेवारी जाति में 19 वीं सदी से जाने अनजाने रूप में संगीत तथा अन्य परंपरा में ह्रास महसूस होता है। नेवारी जाति की पहचान ही उसकी संस्कृति, कला-कौशल, संगीत परंपरा इत्यादि है। इसलिए इसका संरक्षण एवं संवर्धन करना सभी नेवारी लोगों का दायित्व है। नेवारी संगीत एवं अन्य कलाएं आज भी निरंतर रूप में चल रही है। इस परंपरा के प्रति सभी का ध्यानाकर्षण होना अत्यंत आवश्यक है। शोधार्थिनी ने नेपाल के नेवारी संगीत विषय का चयन किया था। नेवारी जाति के लिए नेवारी संगीत एक अभिन्न अंग है। इस शोधकार्य के ज़रिए नेवारी संगीत के शास्त्र पक्ष को मजबूत करने का प्रयास शोधार्थिनी द्वारा किया गया है, जिससे संगीत के विद्यार्थियों, कलाकारों एवं संगीतज्ञों को लाभ मिल सके और भावी पीढ़ी के लिए उसका संरक्षण हो सके। शोधार्थिनी द्वारा यह प्रयास किया गया है कि नेपाल के नेवारी संगीत संबंधी जानकारी जहाँ जहाँ से भी और जो भी प्राप्त हुई है, उन सभी को एकत्र करके उस उपलब्ध सामग्री को शोध की उपयोगिता के अनुसार अपने शोध प्रबंध में स्थान दिया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में तथ्यों को विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक कार्य पद्धति के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। नेवारी संगीत परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही एक लोक संगीत परंपरा है इसलिए इसका विश्लेषणात्मक अध्ययन शास्त्र पक्ष को इकट्ठा करने के उद्धेश्य से किया गया है। शोधार्थिनी ने इस शोध प्रबंध के अंतर्गत नेवारी संगीत के इतिहास एवं वर्तमान स्थिति के बारे में वर्णन किया है। इस कार्य का मुख्य उद्धेश्य प्रयोगात्मक पक्ष के साथ साथ शास्त्र पक्ष को भी मज़बूत करने का है ताकि इस संगीत को अपने में ही सीमित न रखकर सम्पूर्ण देश तथा विदेशों में भी इसे जानने में सहयोग मिल सके। इस तरह अपने देश के लोक संगीत के भण्डार को भर सकें और उसका सांस्कृतिक संवर्धन तथा संरक्षण करने में मदद कर सकें, इस अभिप्राय को भी ध्यान में रखा गया है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत सर्वप्रथम नेपाल देश का परिचय तथा अलग अलग प्रदेशों के सांस्कृतिक एवं संगीत का परिचय प्रस्तुत किया गया है। नेपाल के परिचय में सर्वप्रथम नेपाल शब्द की उत्पत्ति, नेपाल शब्द उत्पत्ति के विभिन्न आधार को प्रस्तुत किया गया है। इसके पश्चात नेपाल के विभिन्न काल जैसे प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में हो चुकी शासन प्रणाली, शासन समय, अलग अलग शासकों के समय में परिवर्तित संगीत के विकास एवं वर्तमान स्वरूप इत्यादि की चर्चा की गई है। तत्पश्चात नेपाल के तीन प्रदेश हिमाल, पहाड़ और तराई के विषय में वर्णन किया गया है। जिसमें उनकी भौगोलिक स्थिति, रहन-सहन, भाषाएँ, विभिन्न जाति तथा जातीय समूहों के बारे में बताया है। तीनों प्रदेशों के परिचय के पश्चात प्रत्येक प्रदेश की जातियों की संस्कृति को बताया गया है। उसके साथ साथ हिमाली क्षेत्र में गाए जाने वाले गीत संगीत, पहाड़ी क्षेत्र में गाया जाने वाला संगीत तथा तराई क्षेत्र में गाई जाने वाली सांगीतिक गतिविधियों को भी जानने का प्रयास किया गया है। तीनों क्षेत्र में से कुछ अति प्रचलित एवं प्रख्यात गीत तथा उनकी स्वरलिपि(भातखण्डे स्वरलिपि के अनुसार) भी प्रस्तुत की गई है। इस प्रकार प्रथम अध्याय का मुख्य केन्द्र नेपाल का परिचय और सभी क्षेत्रों की संस्कृति एवं सांगीतिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, इस अध्याय को प्रस्तुत किया गया है जिससे शोधार्थिनी अपने शोध कार्य की वस्तुनिष्ठा और महत्व को स्पष्ट कर सके।

द्वितीय अध्याय में नेवारी जाति का परिचय, नेवारी संगीत एवं उसके विभिन्न प्रकारों के विषय में वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय शोध कार्य का महत्वपूर्ण अध्याय है। इस अध्याय में मुख्य रूप से नेवारी संगीत के बारे में चर्चा की गई है। जिसके माध्यम से नेपाल के नेवारी संगीत प्रकार को जानने में सहायता प्राप्त होती है। सर्वप्रथम नेपाल की नेवारी जाति का परिचय दिया है जिसमें नेवारी शब्द की उत्पत्ति, मुख्य निवास स्थान, भाषा-बोली, धर्म, वेषभूषा, रहन-सहन, उपजातियां इत्यादि के बारे में चर्चा की है। इसके साथ साथ नेवारी संस्कार तथा सांगीतिक परंपरा को संचालन करने वाला गुठी (संस्था) परंपरा एवं नेवारी

तिथि 'नेपाल संवत्' के बारे में भी बताने का प्रयास किया गया है। इसके पश्चात नेवारी संगीत के विषयों का संक्षेप में वर्णन किया गया है। नेवारी संगीत में प्रयुक्त भाषाएं, विविध समय में संगीतज्ञों द्वारा किए गए संगीत संकलन के बारे में उल्लेख किया है। नेवारी संगीत में प्राचीन समय से गुरु शिष्य परंपरा कायम रही है जिसमें मौखिक परंपरा प्रचलित है, उस शिक्षण प्रणाली के विषय में भी चर्चा की गई है। नेवारी संगीत के परिचय के पश्चात नेवारी संगीत की मुख्य गायन शैली के अंतर्गत दाफा संगीत के बारे में बताया गया है। जिसके अंतर्गत दाफा संगीत का परिचय, उसकी उत्पत्ति, गायन विधि, उनमें प्रयोग किए जाने वाले शास्त्रीय राग एवं ताल की चर्चा की गई है। नेवारी संगीत का मुख्य गायन दाफा संगीत भक्ति रस प्रदान गायन शैली है जिसको विभिन्न प्रसंग जैसे धार्मिक परंपरा, विभिन्न संस्कारगत आयोजनों में हो रहे प्रयोग के विषय में बताया गया है। इसके पश्चात दाफा गायन में प्रयोग होने वाले ग्वारा तथा चालि गीत की स्वरलिपि(भातखण्डे स्वरलिपि के अनुसार) प्रस्तुत की है जो काठमांडू उपत्यका के भिन्न भिन्न स्थानों के दाफा समूह में गाई बजाई जाती है। नेवारी संगीत के दाफा गीत में प्रयोग होने वाले विशेष प्रकार की तिथि लेखन के विषय में भी संक्षेप में वर्णन करने का प्रयास किया गया है। इस शोध प्रबंध के मुख्य विषय नेवारी संगीत की मुख्य चर्चा के पश्चात इस संगीत के अन्य गीत प्रकार नेवारी भजन, चर्या गीत, तुतः गीत, बारहमासे गीत तथा सामाजिक गीत प्रकार के बारे में संक्षेप में वर्णन कर उपलब्ध गीत प्रकार की स्वरलिपियाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

इस प्रकार शोधर्थिनी द्वारा द्वितीय अध्याय में शोध प्रबंध के मुख्य विषय नेवारी संगीत एवं उनके प्रकार के बारे में चर्चा करने के बाद तृतीय अध्याय नेवारी संगीत में प्रयुक्त विभिन्न वाद्यों को ध्यान में रख कर लिखा गया है। इस अध्याय में शोधार्थिनी द्वारा नेवारी संगीत में प्रयुक्त मुख्य वाद्य प्रकारों के बारे में वर्णन किया है। शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत वाद्यों के चार प्रकार तत्, अवनद्य, घन तथा सुषिर वाद्य का अनुसरण करके प्रायः सम्पूर्ण नेवारी संगीत में प्रयुक्त वाद्यों को विभाजन करके प्रत्येक वाद्य का वर्णन किया गया है। साथ में वाद्यों को बजाने का समय एवं संबन्धित वाद्यों के बोलों का भी समावेश करने का प्रयास किया है। इसके पश्चात नेवारी वाद्यों में प्रयोग होने वाले विभिन्न ताल और उसके विस्तार बोलों का वर्णन किया गया है जो विभिन्न गायन तथा जात्रा उत्सव, संस्कारगत कार्यों में बजाए जाते है। नेवारी संगीत में ताल वाद्य एवं उसके प्रयोग के बारे में अध्ययन करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि नेवारी संगीत में गायन के साथ साथ ताल वाद्यों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

नेवारी वाद्यों के वर्गीकरण एवं परिचय के पश्चात चतुर्थ अध्याय में नेवारी जाति में मनाए जाने वाले विभिन्न जात्रा उत्सव तथा उन उत्सवों में संगीत का स्थान एवं प्रयोग के बारे में चर्चा की गई है। नेवारी जाति के संगीत की मुख्य जड़ ही इन्हीं चाड, पर्व तथा जात्रा उत्सव के कारण है इसलिए नेवारी बस्ती के विभिन्न

जात्रा पर्वों में से मुख्य स्थान के जात्रा पर्व के बारे में उल्लेख किया गया है। उन उत्सवों के इतिहास एवं उन्हें किस प्रकार मनाया जाता है और उसमें संगीत की भूमिका के बारे में जानने का प्रयास किया गया है। उसके पश्चात नेवारी बस्तियों में प्रचलित नृत्य प्रकार एवं नाटक में नेवारी संगीत के प्रयोग एवं महत्व के बारे में वर्णन किया गया है। इस प्रकार प्राचीन समय से प्रचलित विभिन्न उत्सव पर्वों में गीत संगीत, नृत्य एवं नाटक के घनिष्ठ संबंध के बारे में बताने का प्रयास किया गया है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत नेवारी संगीत की वर्तमान स्थिति एवं प्रयोग के बारे में जानने का विनम्र प्रयास किया गया है। नेवारी संगीत की स्थिति को नज़दीक से जानने के लिए शोधार्थिनी द्वारा नेवारी संगीत के कलाकार, लेखक तथा संगीतकर, रचनाकार, दाफा गुरु, वाद्य गुरुओं का साक्षात्कार करके उपलब्ध वार्तालाप प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उसके पश्चात संचार माध्यमों से नेवारी संगीत को अधिक मात्रा में व्यापक बनाने में सहयोग तथा जनमानस में नेवारी संगीत की लोकप्रियता के बारे में चर्चा की गई है। नेवारी संगीत में मुख्य प्राचीन संगीत दाफा संगीत है जो भक्ति रस प्रधान गायन शैली है। इस गायन शैली के साथ साथ जनमानस में अन्य कई प्रकार की गायन शैलियां भी प्रचलित है जैसे भजन, बारहमासा गीत, एल्वम गीत, फिल्मी गीत इत्यादि। इन्हीं विभिन्न गीत प्रकारों में से वर्तमान समय में प्रचलित कुछ गीतों की स्वरलिपि भी लिपिबद्ध(भातखण्डे स्वरलिपि के अनुसार) करने का प्रयास शोधार्थिनी ने किया है।

नेवारी संगीत के ऊपर गण्य रूप से स्वदेशी तथा विदेशी विद्वानों ने शोध तथा अनुसंधान करके पुस्तक उपलब्ध कराए हैं। सभी उपलब्ध पुस्तक एवं तथ्यों को जानने के पश्चात शोधार्थिनी को यह प्रतीत हुआ है कि नेवारी संगीत के एक एक पहलुओं को यदि देखा जाए तो गायन शैली, वादन शैली, विभिन्न वाद्य प्रकार इत्यादि में अलग अलग शोधकार्य हो सकता है। प्रस्तुत शोधकार्य में नेवारी संगीत के संक्षिप्त वर्णन पर प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार नेवारी संगीत में उपलब्ध सभी तथ्यों को अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्तमान समय में सम्पूर्ण नेपाल में नेवारी जाति की पहचान प्रतिस्थित रखने में रखने में नेवारी कला, संगीत एवं संस्कृति का मुख्य हाथ है। यह संगीत नेवारी जाति का ही नहीं किन्तु नेपाल देश की ही पहचान के रूप में स्वीकार्य है। इसलिए वर्तमान समय में उपलब्ध संगीत, वाद्य वादन तथा नृत्य प्रकारों का संरक्षण एवं संवर्धन करने में ही इस संगीत का भविष्य टिका हुआ है।